# पुराणों में पर्यावरण संरक्षण

**डॉ० दीपक सिंह**

असिस्टेन्ट प्रोफेसर–इतिहास विभाग

स्वामी शुकदेवानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय

शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश)

**इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्।**

**बिभेत्यल्पश्रुताद्वेदो मामयं प्रहरिष्यति।।**

भारतीय वाङ्मय में पुराणों के आविर्भाव ने विनष्ट होती हुई आर्य जाति को बचाया है। अतः यदि पुराण युग को भारतीय संस्.ति, सभ्यता एवं आचार–विचार का सुधारक युग कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी[1]।

यदि यह कहा जाय कि सम्पूर्ण सृष्टि वृक्षों पर आश्रित है तो अतिशयोक्ति न होगी। जहाँ वृक्षों की उपेक्षा हुई वहाँ विनाश हुआ, जहाँ इन्हें महत्व दिया गया वहाँ सतयुगी सुख की अविरल गंगा प्रवाहित होती रही। कई हजार वर्षों का हमारा विश्व इतिहास इसका साक्षी है।

भारतीय सभ्यता और संस्.ति प्राचीन काल से ही प्र.ति की पूजा और आराधना से ही प्रारंभ होता दिखाई देता है। जिसका आधार डर और उसकी आराधना से होता है। भारतीय साहित्य का अपना एक विशेष महत्व है और इसी कारण भारतीय वाङ्मय में पुराणों का एक विशिष्ट स्थान है। इनमें वेदों के निर्गुण अर्थों का स्पष्टीकरण तो है ही इसके अतिरिक्त कर्मकांड उपासना तथा ज्ञान के विस्तार के साथ–साथ पर्यावरण की रक्षा का भी मंत्र अथवा स्रोत विद्यमान है जो मानव को प्रकृति के करीब लाकर उसके संग अच्छा करने के बारे में सचेत करने का प्रयत्न करता है। पुराणों में जिन व्यक्तियों को मानव, केवल कर्म अथवा मनोकामना पूर्ण करने वाला यज्ञ समझता है उन व्यक्तियों के द्वारा भी पर्यावरण शुद्धि हेतु यज्ञ किए जाते रहे। इन यज्ञों से प्रकृति के वायुमंडल को सुरक्षित करने के तत्व विद्यमान रहे। इसी कारण पद्म पुराण में कहा गया है कि –

**यज्ञेनप्यायिता देवा वृष्ट्युत्सर्गेण मानवाः।**

**आप्यायन वै कुर्वंतिं यज्ञाः कल्याणहेतवः।।**[2]

अर्थात् स्पष्ट रूप से कहा गया है कि यज्ञों से देवताओं का पोषण होता है, यज्ञ द्वारा वृष्टि होने से मनुष्य का जीवन और वृक्षों का पालन होता है। अर्थात् स्पष्ट है कि यह कि केवल देवताओं को भाग देने के लिए नहीं बल्कि प्र.ति को संरक्षित और सुरक्षित बनाए रखने के लिए इन नदियों का विधान किया गया।

सभी प्रकार के यज्ञ को केवल ईश्वर प्रसन्नता के लिए नहीं वरन् पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले तत्वों को साफ करने के लिए भी होता है। वर्तमान में मानव का ध्यान पर्यावरण संरक्षण के इन कारणों को अनदेखा कर वैज्ञानिक अवधारणा की ओर अत्यधिक आकर्षित कर रहा है। पर्यावरण की रक्षा के लिए पुराणों में या भारतीय साहित्य में निरंतर वृक्षों, नदियों, तालाबों के जीवन को बचाने और वातावरण शुद्ध के का संदेश दिया जाता रहा है, पुराणों में पर्यावरण संरक्षण और उसको बचाने के लिए प्रेरणा के रूप में कार्य करते हैं। मत्स्य पुराण स्पष्ट कहता है–

**दशकूप समोवापी दशवापीसमोह्रदः।**

**दशह्रदसमः पुत्रो दशपुत्रसमः द्रुमः।।[3]**

(विधान पारिजात खण्ड 4. अ0 49)

अर्थात् एक सरोवर के निर्माण में जो पुण्य होता है वह दस कुओं के निर्माण के समान है और दस सरावरों के निर्माण में जो पुण्य होता है वह एक ह्रद (विशाल सरोवर) के निर्माण में है। दस विशाल सरोवरों को एक पुत्र के समान माना गया है। और एक वृक्ष का रोपण दस पुत्र के समान कहा गया अर्थात जीवन का सबसे उच्च आदर्श प्रस्तुत किया गया है ।

पुराणों में पर्यावरण को बचाने के लिए पुण्य से जोड़ा गया है। पुराणों में वृक्षों के रोपण से कई पुण्य बताए गए हैं, जिससे मानव पुण्यों के कारण भी वृक्षों का रोपण कर सके। शिवपुराण में कहा गया है कि–''जो बागीचा लगाते हैं, छायादार वृक्ष का रोपण करते हैं, वह बिना कष्ट उठाए यमलोक प्रस्थान करते हैं। जो मनुष्य बहुत ज्यादा मात्रा में फूल लगाते हैं वह पुष्पक विमान के द्वारा यमलोक को प्रस्थान करते हैं।'' [4] जल को समस्त जीव समुदाय को तृप्त करने वाला बताया गया है क्योंकि वृक्षों का और मानवीय सभ्यता का आधार पर्यावरण तो है ही, लेकिन पर्यावरण का मुख्य आधार भी जल है। बिना जल के जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती, या यूँ कहा जाए तो ज्यादा उचित रहेगा कि पंच महाभूत तत्व जीवन का मुख्य आधार है क्योंकि उनके बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती –

**पानीयदानं परमं दानामुत्तमं तदा।**

**सर्वेषां जीवपुंजानां तर्पणं जीवनं स्मश्तम्।।[5]**

पुराणों के अनुसार वृक्षों की सेवा से सम्पूर्ण सृष्टि की सेवा करने का पुण्य कार्य सम्पन्न होता है। वृक्षों की सेवा में जल से सिंचन का स्थान सर्वोपरि है। पर्याप्त जल पाने से वृक्ष की जीवन की रक्षा होती है, ये तेजी से बढ़ते हैं, इन पर आश्रित प्राणियों को सुख मिलता है व पर्यावरण सुधरता है।

''स्कन्द पुराण में, भविष्योत्तर पुराण में तथा अन्य पुराणों में भी तुलसी, पीपल तथा बेल इत्यादि वृक्षों में धार्मिक माहात्म्य के द्वारा जल सिंचन का प्रावधान है जो हमारी धार्मिक–मान्यताओं में आज भी प्रचलित है।

मानवी चेतना पर शोध करने वाले ऋषियों, विद्वानों का मानना है कि तरूसेवा में व्यक्ति जो श्रम और पुरूषार्थ व्यय करता है उससे उसका पाप क्षीण होता है, पुण्य बल बढ़ता है व इसके प्रभाववश सभी प्रकार के दुखः–दुर्भाग्य दूर होते हैं व सुख–सौभाग्य का अभ्युदय होता है। यह अर्जन बिना श्रम के नहीं बल्कि तपस्या के बदले होता है। जल सिंचन के बहाने पवित्र वृक्षों का सान्निध्य हमें सद्विचार व उस पर चलने की शक्ति देता है और व्यक्तित्व का परिष्कार करता है।''[6]

**सेचनादपि वृक्षस्य रोपितस्य परेण तु।**

**महत्फलमवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा।।[7]**

(विष्णुत्तर पुराण 3.297)

अर्थात् दूसरे द्वारा रोपित वृक्ष का सिंचन करने से भी महान् फलों की प्राप्ति होती है, इसमें विचार करने की आवश्यकता नहीं है।

सभी मनुष्यों को बावड़ी (तालाब) बनाना चाहिए। जब कुएं से पानी निकाला जाता है या निकल कर आता है तब वह पापी पुरुष के पापकर्म का आधा भाग समाप्त कर देता है। मानव के समस्त पापों को हर लेता है। जिसके

खुदवाए हुए तालाब में, जलाशय में गाय, ब्राह्मण, साधु संत, ऋषि जल ग्रहण करते हैं वह अपने सारे वंश का उद्धार कर देता है। यदि हम पर्यावरण का हित चाहते हैं तो इनका संपादन आवश्यक है तथा पर्यावरण को बचाने के लिए ऋषि–मुनियों ने मंत्रों के माध्यम से संकेत दिया है। यदि वर्तमान में मनुष्य इन युक्तियों को अपना ले तो हमारा विश्व इस आधुनिकता की भेंट नहीं चढ़ेगा और पूरा विश्व पर्यावरण प्रदूषण से मुक्त हो जाएगा। महात्माओं, ऋषियों व मुनियों का कथन है–जो दुर्गम स्थानों पर पर वृक्ष लगाते हैं वह अपना भूत और आने वाला संपूर्ण पीढ़ियों को उद्धार करते हैं, जिसके लिए वृक्षों को लगाना अति आवश्यक है और पर्यावरण की संरक्षा और सुरक्षा होती रहेगी –

**अतीतानागतान् सर्वान् पितृवंशास्तु तारयेत्।**

**कान्तारे वृक्षरोपी यस्तस्माद् वृक्षांस्तु रोपयेत्।।**[8]

अर्थात् जो मनुष्य वृक्ष या पेड़–पौधे लगाते हैं उन्हें पुत्र की प्राप्ति होती है। वृक्ष लगाने वाले पुरुष लोक से जाने के पश्चात् परलोक में अच्छे लोकों को प्राप्त करता है। तालाब को खुदवाने वाला, वृक्ष को लगाने वाला और यज्ञ को करवाने वाला पुरुष कभी भी स्वर्ग से नीचे का स्थान प्राप्त नहीं करता है।

''भविष्य पुराण में वृक्षों की उपयोगिता को बताते हुए कहा गया है कि उस समय वृक्ष के मूल से दस हाथ चारों ओर का क्षेत्र उत्तम क्षेत्र माना गया है, और उसकी छाया जहाँ तक जाती है, वह स्वस्थ वृक्ष के संसर्ग में बहने वाला जल जहाँ तक पहुँचता है वह क्षेत्र गंगा के पवित्रता के समान पवित्र माना गया है।''[9]

''अग्नि पुराण में आयु वेदोक्त वृक्ष विज्ञान का वर्णन किया गया है। ग्रह के उत्तर दिशा में लक्ष्य पाकर पूर्व में बट बरगद दक्षिण में आम्र और दक्षिण में स्वस्थ पीपल वृक्ष मंगल माना गया है।''[10] घर के पास दक्षिण दिशा में उत्पन्न काँटेदार वृक्ष भी शुभ है, आवास स्थान के पास उद्यान का निर्माण होना चाहिए।[11]

निष्कर्षतः विष्णु पुराण, अग्नि पुराण, मत्स्य पुराण, वराह पुराण, वामन पुराण और अन्य पुराणों में भी धर्म पर आधारित पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित निर्देश दिया गया है और समाज प्राचीन काल से ही उसे स्वीकार करता आ रहा है।

हम कह सकते हैं कि पुराणों के अंतर्गत, कर्मकांड के अंतर्गत जो पारलौकिक एवं प्रचुर अत्यधिक सुख को प्राप्ति के लिए यज्ञ अनुष्ठान कराए जाते हैं वह केवल परलोक प्राप्ति के लिए ही सीमित नहीं है वरन् वातावरण शुद्धि हेतु भी किए जाते थे पुराणों में विभिन्न मंत्रों के माध्यम से मानव को पर्यावरण संरक्षण हेतु जागरूक किया गया है। वर्तमान समाज में भी पर्यावरण संरक्षण के अनेकों उपाय किए जा रहे हैं लेकिन जरूरत है समाज में रहने वाले हम सभी अपने पर्यावरण को सुरक्षित एवं संरक्षण के लिए एक प्रण लें कि वह इसकी रक्षा करेंगे। क्योंकि पुराणों, वेदों में उपाय है परन्तु उन उपायों पर अमल करके ही हम अपने पर्यावरण और स्वयं को बचा सकेंगे।

## संदर्भ

1. त्रिपाठी, डॉ. अनन्तमणि, पुराणों में पर्यावरण, manavbhartilive.com
2. पद्म पुराण, सृष्टि खण्ड 3/124
3. मत्स्य पुराण, विधान पारिजात खण्ड 4, अ. 49
4. कल्याण, अंक, पृ. 402
5. शिव पुराण, स.स. 12/1

6. त्रिपाठी, डॉ. अनन्तमणि, पुराणों में पर्यावरण, manavbhartilive.com

7. विष्णुत्तर पुराण 3.297

8. शिव पुराण, उ. संहिता 11/7

9. भविष्य पुराण, 10–11

10. अग्नि पुराण 1/282

11. अग्नि पुराण 1–2/282